INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD)
© 2026 IJNRD | Volume 11, Issue 6, June 2026 | ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

भारत की क्षेत्रीय सुरक्षा नीति और आसियान देशों की भूमिका

आलोक कुमार
शोध छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग, श्यामा प्रसाद मुखर्जी राजकीय महाविद्यालय (इलाहाबाद विश्वविद्यालय), फाफामऊ, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत।

डॉ. हिमांशु यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, श्यामा प्रसाद मुखर्जी राजकीय महाविद्यालय (इलाहाबाद विश्वविद्यालय), फाफामऊ, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांशः–भारत की क्षेत्रीय सुरक्षा नीति में आसियान देशों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि दक्षिण–पूर्व एशिया भारत की सामरिक, आर्थिक और समुद्री सुरक्षा से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ क्षेत्र है। बदलते वैश्विक परिदृश्य में हिंद–प्रशांत क्षेत्र शक्ति–संतुलन, समुद्री मार्गों की सुरक्षा, व्यापारिक हितों और क्षेत्रीय स्थिरता का केंद्र बन गया है। भारत की 'लुक ईस्ट नीति' से लेकर 'एक्ट ईस्ट नीति' तक आसियान देशों के साथ संबंधों में लगातार विस्तार हुआ है। आज भारत आसियान को केवल आर्थिक साझेदार के रूप में नहीं, बल्कि क्षेत्रीय सुरक्षा, समुद्री सहयोग, संपर्क–विकास और सामरिक संतुलन के महत्वपूर्ण सहयोगी के रूप में देखता है। इस शोध–पत्र का मुख्य उद्देश्य भारत की क्षेत्रीय सुरक्षा नीति में आसियान देशों की भूमिका का विश्लेषण करना है। इसमें यह अध्ययन किया गया है कि भारत और आसियान देशों के बीच सुरक्षा सहयोग किन–किन क्षेत्रों में विकसित हुआ है और यह सहयोग हिंद–प्रशांत क्षेत्र में शांति एवं स्थिरता बनाए रखने में किस प्रकार योगदान देता है। दक्षिण चीन सागर में चीन की बढ़ती सक्रियता, समुद्री व्यापार मार्गों की सुरक्षा, आतंकवाद, साइबर सुरक्षा, अवैध तस्करी, समुद्री डकैती और जलवायु परिवर्तन जैसी गैर–पारंपरिक सुरक्षा चुनौतियों ने भारत और आसियान देशों को आपसी सहयोग बढ़ाने के लिए प्रेरित किया है।

भारत के लिए आसियान क्षेत्र विशेष रूप से इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि मलक्का जलडमरूमध्य जैसे प्रमुख समुद्री मार्ग भारत के व्यापार और ऊर्जा सुरक्षा से जुड़े हुए हैं। भारत की बड़ी मात्रा में ऊर्जा और व्यापारिक आवाजाही हिंद महासागर तथा दक्षिण–पूर्व एशियाई समुद्री मार्गों से होकर गुजरती है। ऐसी स्थिति में आसियान देशों के साथ समुद्री सुरक्षा सहयोग भारत की क्षेत्रीय सुरक्षा नीति का महत्वपूर्ण अंग बन जाता है। भारत और आसियान के बीच संयुक्त सैन्य अभ्यास, रक्षा संवाद, समुद्री सहयोग, आपदा प्रबंधन, मानवीय सहायता तथा क्षेत्रीय मंचों में भागीदारी इस संबंध को और मजबूत करते हैं। आसियान की भूमिका भारत की हिंद–प्रशांत नीति में भी केंद्रीय है। भारत एक स्वतंत्र, खुला, समावेशी और नियम–आधारित हिंद–प्रशांत क्षेत्र का समर्थन करता है। इस दृष्टि से आसियान की केंद्रीयता भारत की नीति के अनुरूप है। हालांकि आसियान देशों के भीतर चीन को लेकर अलग–अलग दृष्टिकोण, आंतरिक राजनीतिक समस्याएँ, म्यांमार संकट और आर्थिक निर्भरता जैसी चुनौतियाँ भारत–आसियान सुरक्षा सहयोग को सीमित भी करती हैं।

मुख्य शब्दः– भारत, आसियान, क्षेत्रीय सुरक्षा, एक्ट ईस्ट नीति, हिंद–प्रशांत, समुद्री सुरक्षा, क्षेत्रीय शांति, चीन कारक।

प्रस्तावनाः– वर्तमान अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में क्षेत्रीय सुरक्षा का महत्व निरंतर बढ़ता जा रहा है। वैश्वीकरण, आर्थिक परस्पर निर्भरता, समुद्री व्यापार, ऊर्जा सुरक्षा, आतंकवाद, साइबर अपराध, जलवायु परिवर्तन और महाशक्तियों की प्रतिस्पर्धा ने सुरक्षा की अवधारणा को केवल सैन्य दृष्टिकोण तक सीमित नहीं रहने दिया है। आज सुरक्षा का अर्थ केवल सीमाओं की रक्षा नहीं है, बल्कि आर्थिक स्थिरता, समुद्री मार्गों की स्वतंत्रता, राजनीतिक सहयोग, तकनीकी सुरक्षा और क्षेत्रीय संतुलन से भी जुड़ गया है। इसी संदर्भ में भारत की क्षेत्रीय सुरक्षा नीति में दक्षिण–पूर्व एशिया और आसियान देशों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। भारत भौगोलिक, राजनीतिक और सामरिक दृष्टि से हिंद महासागर और हिंद–प्रशांत क्षेत्र का एक प्रमुख देश है। भारत की सुरक्षा नीति लंबे समय तक दक्षिण एशिया और हिंद महासागर क्षेत्र पर केंद्रित रही, लेकिन बदलते वैश्विक और क्षेत्रीय परिवेश ने भारत को दक्षिण–पूर्व एशिया की ओर अधिक सक्रिय रूप से ध्यान देने के लिए प्रेरित किया। इसी दिशा में भारत ने 1990 के दशक में 'लुक ईस्ट नीति' अपनाई, जिसका उद्देश्य दक्षिण–पूर्व एशियाई देशों के साथ आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करना था। बाद में यही नीति अधिक सक्रिय और रणनीतिक रूप लेते हुए 'एक्ट ईस्ट नीति' में परिवर्तित

हुई। इस नीति के अंतर्गत आसियान देशों को भारत की विदेश नीति और सुरक्षा नीति में विशेष स्थान प्राप्त हुआ। आसियान अर्थात दक्षिण–पूर्व एशियाई राष्ट्रों का संगठन, क्षेत्रीय सहयोग और स्थिरता का एक महत्वपूर्ण मंच है। इसके सदस्य देश जैसे इंडोनेशिया, मलेशिया, सिंगापुर, थाईलैंड, वियतनाम, फिलीपींस, ब्रूनेई, कंबोडिया, लाओस और म्यांमार भारत के लिए सामरिक और आर्थिक दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण हैं। ये देश हिंद महासागर और प्रशांत महासागर को जोड़ने वाले समुद्री मार्गों के निकट स्थित हैं। विशेष रूप से मलक्का जलडमरूमध्य विश्व के सबसे व्यस्त समुद्री व्यापार मार्गों में से एक है, जिससे भारत के व्यापार और ऊर्जा आपूर्ति का गहरा संबंध है। इसलिए इस क्षेत्र की स्थिरता भारत की राष्ट्रीय और क्षेत्रीय सुरक्षा से सीधे जुड़ी हुई है।

भारत की क्षेत्रीय सुरक्षा नीति में आसियान देशों की भूमिका इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि हिंद–प्रशांत क्षेत्र आज वैश्विक शक्ति–राजनीति का केंद्र बन चुका है। चीन की बढ़ती आर्थिक और सैन्य सक्रियता, दक्षिण चीन सागर विवाद, समुद्री मार्गों पर नियंत्रण की प्रतिस्पर्धा और क्षेत्रीय देशों की सुरक्षा चिंताओं ने भारत और आसियान को एक–दूसरे के निकट लाने का कार्य किया है। भारत एक स्वतंत्र, खुला, समावेशी और नियम–आधारित हिंद–प्रशांत क्षेत्र का समर्थन करता है। इसी प्रकार आसियान भी क्षेत्रीय शांति, संवाद, सहयोग और संतुलन को बढ़ावा देता है। इस दृष्टि से भारत और आसियान के हित कई क्षेत्रों में समान दिखाई देते हैं। भारत और आसियान देशों के बीच सुरक्षा सहयोग केवल पारंपरिक सैन्य क्षेत्र तक सीमित नहीं है। इसमें समुद्री सुरक्षा, आतंकवाद–रोधी सहयोग, साइबर सुरक्षा, आपदा प्रबंधन, मानवीय सहायता, रक्षा संवाद, संयुक्त सैन्य अभ्यास, व्यापारिक संपर्क और क्षेत्रीय संस्थागत सहयोग जैसे अनेक आयाम शामिल हैं। आसियान क्षेत्र भारत के उत्तर–पूर्वी राज्यों के विकास और संपर्क–संबंधों के लिए भी महत्वपूर्ण है। भारत–म्यांमार–थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग और अन्य संपर्क परियोजनाएँ भारत को दक्षिण–पूर्व एशिया से जोड़ने में सहायक हैं। इससे न केवल व्यापार और संपर्क बढ़ता है, बल्कि सीमावर्ती क्षेत्रों की सुरक्षा और विकास को भी मजबूती मिलती है। हालाँकि भारत–आसियान संबंधों के सामने कुछ चुनौतियाँ भी मौजूद हैं। आसियान देशों के चीन के साथ आर्थिक संबंध गहरे हैं, जिसके कारण वे कई बार सुरक्षा मुद्दों पर स्पष्ट और संयुक्त रुख अपनाने से बचते हैं। म्यांमार की राजनीतिक अस्थिरता, दक्षिण चीन सागर विवाद, क्षेत्रीय देशों के अलग–अलग राष्ट्रीय हित और संपर्क परियोजनाओं की धीमी प्रगति भी सहयोग को प्रभावित करती है। इसके बावजूद भारत और आसियान के बीच सहयोग की संभावनाएँ व्यापक हैं।

भारत की क्षेत्रीय सुरक्षा नीति के विभिन्न आयामः–

1. ऐतिहासिक आयामः– भारत और आसियान देशों के संबंधों का ऐतिहासिक विकास भारत की क्षेत्रीय सुरक्षा नीति को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। स्वतंत्रता के बाद भारत की विदेश नीति मुख्य रूप से गुटनिरपेक्षता और दक्षिण एशिया की सुरक्षा पर केंद्रित रही। उस समय दक्षिण–पूर्व एशिया के साथ भारत के संबंध सीमित थे। शीत युद्ध के दौरान वैचारिक मतभेदों और भारत की सोवियत संघ से निकटता के कारण आसियान देशों से दूरी बनी रही। 1990 के दशक में शीत युद्ध की समाप्ति और आर्थिक उदारीकरण के बाद भारत ने दक्षिण–पूर्व एशिया की ओर सक्रिय रुख अपनाया। इसी संदर्भ में 'लुक ईस्ट नीति' की शुरुआत हुई। इसका उद्देश्य आसियान देशों के साथ आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक संबंध मजबूत करना था। आगे चलकर 2014 में यह नीति 'एक्ट ईस्ट नीति' के रूप में अधिक सक्रिय और रणनीतिक बन गई। इस ऐतिहासिक परिवर्तन के साथ आसियान भारत की क्षेत्रीय सुरक्षा नीति का महत्वपूर्ण भाग बन गया।

2. वैचारिक या सैद्धांतिक आयामः–भारत की क्षेत्रीय सुरक्षा नीति और आसियान देशों की भूमिका को समझने के लिए वैचारिक और सैद्धांतिक दृष्टिकोण अत्यंत महत्वपूर्ण है। सुरक्षा की पारंपरिक अवधारणा राज्य की सीमाओं, सैन्य शक्ति और बाहरी खतरों से जुड़ी रही है, लेकिन वर्तमान समय में सुरक्षा का दायरा विस्तृत होकर आर्थिक, समुद्री, साइबर, ऊर्जा, पर्यावरण और मानवीय सुरक्षा तक फैल गया है। इसी व्यापक सुरक्षा दृष्टिकोण के अंतर्गत भारत आसियान देशों को अपनी क्षेत्रीय सुरक्षा नीति का महत्वपूर्ण भाग मानता है। यथार्थवादी सिद्धांत के अनुसार प्रत्येक राज्य अपने राष्ट्रीय हित, शक्ति–संतुलन और सुरक्षा को प्राथमिकता देता है। इस दृष्टि से भारत आसियान देशों के साथ सहयोग के माध्यम से हिंद–प्रशांत क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव को संतुलित करना चाहता है। वहीं उदारवादी दृष्टिकोण के अनुसार अंतरराष्ट्रीय संस्थाएँ, संवाद और आर्थिक सहयोग क्षेत्रीय शांति को मजबूत करते हैं। आसियान इसी संस्थागत सहयोग का उदाहरण है, जहाँ भारत आसियान क्षेत्रीय मंच, पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन और आसियान रक्षा मंत्रियों की बैठक–प्लस जैसे मंचों के माध्यम से सुरक्षा संवाद को आगे बढ़ाता है।

3. समुद्री सुरक्षा आयामः– भारत हिंद महासागर क्षेत्र का महत्वपूर्ण देश है और उसकी आर्थिक, ऊर्जा तथा सामरिक सुरक्षा समुद्री मार्गों से गहराई से जुड़ी हुई है। दक्षिण–पूर्व एशिया और आसियान देश भारत के लिए इसलिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे हिंद महासागर और प्रशांत महासागर को जोड़ने वाले प्रमुख समुद्री मार्गों के पास स्थित हैं। विशेष रूप से मलक्का जलडमरूमध्य भारत के व्यापार और ऊर्जा आपूर्ति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण मार्ग है। आसियान देशों के साथ भारत का समुद्री सहयोग हिंद–प्रशांत क्षेत्र में शांति और स्थिरता बनाए रखने में सहायक है। दक्षिण चीन सागर में बढ़ते तनाव, चीन की समुद्री सक्रियता, समुद्री डकैती, अवैध मछली पकड़ना, तस्करी और समुद्री आतंकवाद जैसी चुनौतियों ने भारत और आसियान देशों को आपसी सहयोग बढ़ाने के लिए प्रेरित किया है। भारत स्वतंत्र, खुला और नियम–आधारित हिंद–प्रशांत क्षेत्र का समर्थन करता है, जिसमें समुद्री मार्गों की स्वतंत्रता और अंतरराष्ट्रीय कानूनों का पालन महत्वपूर्ण है।

भारत और आसियान देशों के बीच नौसैनिक अभ्यास, रक्षा संवाद, समुद्री निगरानी, आपदा राहत और मानवीय सहायता जैसे क्षेत्रों में सहयोग बढ़ रहा है। सिंगापुर, इंडोनेशिया, वियतनाम और फिलीपींस जैसे देश भारत के समुद्री सुरक्षा सहयोग में विशेष भूमिका निभाते हैं। यह सहयोग भारत को हिंद–प्रशांत क्षेत्र में अपनी रणनीतिक उपस्थिति मजबूत करने में सहायता करता है। अतः समुद्री सुरक्षा भारत–आसियान संबंधों का एक केंद्रीय विषय है। यह न केवल भारत की क्षेत्रीय सुरक्षा नीति को मजबूत करती है, बल्कि पूरे हिंद–प्रशांत क्षेत्र में संतुलन, सहयोग और स्थिरता को भी बढ़ावा देती है।

4. हिंद–प्रशांत और आसियान की केंद्रीय भूमिकाः– भारत की क्षेत्रीय सुरक्षा नीति में हिंद–प्रशांत क्षेत्र का विशेष महत्व है, क्योंकि यह क्षेत्र वैश्विक व्यापार, समुद्री सुरक्षा, ऊर्जा आपूर्ति और सामरिक संतुलन का प्रमुख केंद्र बन चुका है। हिंद महासागर और प्रशांत महासागर को जोड़ने वाला यह क्षेत्र भारत के आर्थिक और सुरक्षा हितों से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है। भारत एक स्वतंत्र, खुला, समावेशी और नियम–आधारित हिंद–प्रशांत क्षेत्र का समर्थन करता है, जहाँ सभी देशों को समुद्री मार्गों के स्वतंत्र उपयोग और शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व का अवसर प्राप्त हो। इस संदर्भ में आसियान की केंद्रीय भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। आसियान देश भौगोलिक रूप से हिंद–प्रशांत क्षेत्र के मध्य में स्थित हैं और मलक्का जलडमरूमध्य जैसे महत्वपूर्ण समुद्री मार्गों पर उनका प्रभाव है। इसलिए क्षेत्रीय स्थिरता, समुद्री सुरक्षा और व्यापारिक स्वतंत्रता बनाए रखने में आसियान की भूमिका निर्णायक बन जाती है। भारत अपनी एक्ट ईस्ट नीति और हिंद–प्रशांत दृष्टिकोण के माध्यम से आसियान को एक प्रमुख साझेदार के रूप में देखता है। आसियान की केंद्रीयता भारत के लिए इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह क्षेत्रीय विवादों को संवाद, सहयोग और संस्थागत प्रक्रिया के माध्यम से हल करने पर बल देता है।

5. चीन फैक्टरः– हिंद–प्रशांत क्षेत्र में चीन की बढ़ती आर्थिक, सैन्य और समुद्री सक्रियता ने भारत और आसियान देशों को सुरक्षा सहयोग बढ़ाने के लिए प्रेरित किया है। दक्षिण चीन सागर में चीन का प्रभाव, कृत्रिम द्वीपों का निर्माण, नौसैनिक गतिविधियाँ और समुद्री मार्गों पर नियंत्रण की कोशिशें क्षेत्रीय स्थिरता के लिए चुनौती मानी जाती हैं। भारत दक्षिण चीन सागर में किसी प्रत्यक्ष विवाद का पक्षकार नहीं है, फिर भी वह स्वतंत्र नौवहन, अंतरराष्ट्रीय कानून और नियम–आधारित व्यवस्था का समर्थन करता है। आसियान देशों के लिए चीन एक अवसर और चुनौती दोनों है। चीन उनके लिए बड़ा व्यापारिक साझेदार है, इसलिए कई आसियान देश चीन के विरुद्ध खुलकर कठोर रुख अपनाने से बचते हैं। दूसरी ओर वियतनाम, फिलीपींस, इंडोनेशिया और मलेशिया जैसे देशों की समुद्री सुरक्षा चिंताएँ चीन की गतिविधियों से जुड़ी हुई हैं। इसी कारण आसियान भारत को एक संतुलनकारी शक्ति के रूप में देखता है। हिंद–प्रशांत पर आसियान दृष्टिकोण, आसियान केंद्रीयता, खुलापन, समावेशिता और नियम–आधारित व्यवस्था पर जोर दिया गया है, जो भारत की हिंद–प्रशांत नीति से मेल खाता है। भारत और आसियान ने 2022 में अपने संबंधों को व्यापक रणनीतिक साझेदारी तक बढ़ाया और 2023 में समुद्री सहयोग पर संयुक्त वक्तव्य जारी किया, जिसमें समुद्री शांति, स्थिरता और उभरती समुद्री चुनौतियों पर सहयोग को महत्व दिया गया। अतः चीन फैक्टर भारत–आसियान संबंधों को केवल आर्थिक नहीं, बल्कि सामरिक और सुरक्षा दृष्टि से भी महत्वपूर्ण बनाता है। यह सहयोग क्षेत्रीय शक्ति–संतुलन, समुद्री सुरक्षा और हिंद–प्रशांत स्थिरता के लिए आवश्यक है।

6. रक्षा और सैन्य सहयोगः– भारत की क्षेत्रीय सुरक्षा नीति में आसियान देशों के साथ रक्षा और सैन्य सहयोग का विशेष महत्व है। हिंद–प्रशांत क्षेत्र में बदलते सामरिक संतुलन, समुद्री मार्गों की सुरक्षा और चीन की बढ़ती सक्रियता ने भारत तथा आसियान देशों को रक्षा सहयोग बढ़ाने के लिए प्रेरित किया है। भारत आसियान को क्षेत्रीय शांति, स्थिरता और संतुलन बनाए रखने वाला महत्वपूर्ण साझेदार मानता है। भारत और आसियान देशों के बीच रक्षा सहयोग कई स्तरों पर विकसित हुआ है। इसमें संयुक्त सैन्य अभ्यास, नौसैनिक अभ्यास, रक्षा वार्ता, प्रशिक्षण कार्यक्रम,

क्षमता निर्माण और सैन्य अधिकारियों के आदान–प्रदान जैसे क्षेत्र शामिल हैं। भारत सिंगापुर, वियतनाम, इंडोनेशिया, म्यांमार, थाईलैंड और फिलीपींस जैसे देशों के साथ अलग–अलग रक्षा संबंधों को मजबूत कर रहा है। विशेष रूप से समुद्री सुरक्षा के क्षेत्र में भारत और आसियान देशों का सहयोग महत्वपूर्ण है, क्योंकि मलक्का जलडमरूमध्य और दक्षिण चीन सागर जैसे क्षेत्र वैश्विक व्यापार और ऊर्जा सुरक्षा से जुड़े हुए हैं। भारत आसियान क्षेत्र में किसी सैन्य टकराव को बढ़ावा देने के बजाय नियम–आधारित व्यवस्था, स्वतंत्र नौवहन और शांतिपूर्ण विवाद समाधान का समर्थन करता है। आसियान क्षेत्रीय मंच, पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन और एडीएमएम–प्लस जैसे मंचों के माध्यम से भारत क्षेत्रीय सुरक्षा संवाद में सक्रिय भूमिका निभाता है। इन मंचों से भारत और आसियान देशों को आतंकवाद, समुद्री डकैती, साइबर सुरक्षा, आपदा प्रबंधन और मानवीय सहायता जैसे मुद्दों पर सहयोग का अवसर मिलता है। इस प्रकार रक्षा और सैन्य सहयोग भारत–आसियान संबंधों का एक महत्वपूर्ण आयाम है, जो क्षेत्रीय सुरक्षा, समुद्री स्थिरता और हिंद–प्रशांत क्षेत्र में शक्ति–संतुलन को मजबूत करता है।

7. आर्थिक सुरक्षा और सप्लाई चेन सुरक्षाः– वर्तमान समय में सुरक्षा केवल सैन्य शक्ति तक सीमित नहीं रही, बल्कि व्यापार, निवेश, ऊर्जा, तकनीक और उत्पादन–श्रृंखलाओं की स्थिरता से भी जुड़ गई है। आसियान देश भारत के लिए आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण साझेदार हैं, क्योंकि ये देश हिंद–प्रशांत क्षेत्र के प्रमुख व्यापारिक मार्गों और उत्पादन केंद्रों के निकट स्थित हैं। भारत का बड़ा समुद्री व्यापार दक्षिण–पूर्व एशियाई मार्गों से होकर गुजरता है, इसलिए इस क्षेत्र की स्थिरता भारत की आर्थिक सुरक्षा के लिए आवश्यक है। कोविड–19 महामारी और रूस–यूक्रेन युद्ध जैसी घटनाओं ने यह स्पष्ट कर दिया कि किसी एक देश या क्षेत्र पर अत्यधिक निर्भरता सप्लाई चेन को कमजोर बना सकती है। इसी कारण भारत अब विविधीकृत और सुरक्षित सप्लाई चेन पर जोर दे रहा है। आसियान देश इस दिशा में भारत के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इलेक्ट्रॉनिक्स, औषधि, ऑटोमोबाइल, खाद्य पदार्थ, ऊर्जा और डिजिटल तकनीक जैसे क्षेत्रों में भारत और आसियान के बीच सहयोग सप्लाई चेन को मजबूत बना सकता है।

8. कनेक्टिविटी और भारत का उत्तर–पूर्वः– कनेक्टिविटी केवल आर्थिक विकास का साधन नहीं, बल्कि सामरिक सुरक्षा और क्षेत्रीय स्थिरता का भी आधार है। भारत का उत्तर–पूर्व क्षेत्र भौगोलिक रूप से दक्षिण–पूर्व एशिया के निकट स्थित है। इसलिए यह क्षेत्र भारत की 'एक्ट ईस्ट नीति' और आसियान देशों के साथ संबंधों में एक प्रवेश–द्वार की भूमिका निभाता है। उत्तर–पूर्व भारत म्यांमार, बांग्लादेश, भूटान और चीन से जुड़ा हुआ है, जिससे इसकी सामरिक महत्ता और बढ़ जाती है। भारत–म्यांमार–थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग, कलादान मल्टी–मॉडल ट्रांजिट ट्रांसपोर्ट परियोजना और अन्य संपर्क परियोजनाएँ भारत को आसियान देशों से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इन परियोजनाओं से व्यापार, परिवहन, पर्यटन और सांस्कृतिक आदान–प्रदान को बढ़ावा मिल सकता है। साथ ही उत्तर–पूर्वी राज्यों में रोजगार, आधारभूत संरचना और आर्थिक गतिविधियों का विस्तार भी संभव होता है। सुरक्षा की दृष्टि से कनेक्टिविटी भारत के लिए अत्यंत उपयोगी है।

9. गैर–पारंपरिक सुरक्षाः– पहले सुरक्षा को मुख्य रूप से सैन्य शक्ति और सीमा–सुरक्षा से जोड़ा जाता था, लेकिन वर्तमान समय में आतंकवाद, साइबर अपराध, जलवायु परिवर्तन, समुद्री डकैती, मानव तस्करी, अवैध प्रवासन, महामारी, खाद्य सुरक्षा और आपदा प्रबंधन जैसे मुद्दे भी राष्ट्रीय और क्षेत्रीय सुरक्षा को प्रभावित करते हैं। भारत और आसियान दोनों ही ऐसे क्षेत्र में स्थित हैं जहाँ प्राकृतिक आपदाएँ, समुद्री चुनौतियाँ और सीमा–पार अपराध सामान्य रूप से दिखाई देते हैं। हिंद महासागर और दक्षिण–पूर्व एशियाई समुद्री मार्गों में समुद्री डकैती, अवैध मछली पकड़ना और नशीले पदार्थों की तस्करी जैसी समस्याएँ भारत और आसियान देशों के लिए साझा चिंता का विषय हैं। इसलिए समुद्री निगरानी, सूचना–साझाकरण और संयुक्त सहयोग क्षेत्रीय सुरक्षा को मजबूत करने में सहायक हैं। साइबर सुरक्षा भी एक महत्वपूर्ण गैर–पारंपरिक सुरक्षा आयाम है। डिजिटल अर्थव्यवस्था के विस्तार के साथ साइबर हमले, डेटा चोरी और ऑनलाइन अपराधों का खतरा बढ़ा है। भारत और आसियान देशों के बीच साइबर सुरक्षा, डिजिटल सहयोग और क्षमता निर्माण क्षेत्रीय स्थिरता के लिए आवश्यक हैं।

10. संस्थागत आयामः– क्षेत्रीय सुरक्षा केवल द्विपक्षीय संबंधों से नहीं, बल्कि बहुपक्षीय मंचों और संस्थाओं के माध्यम से अधिक प्रभावी बनती है। आसियान ने दक्षिण–पूर्व एशिया में संवाद, सहयोग और विश्वास–निर्माण की एक मजबूत संस्थागत व्यवस्था विकसित की है। भारत इन संस्थागत मंचों के माध्यम से आसियान देशों के साथ सुरक्षा, आर्थिक सहयोग, समुद्री सुरक्षा और राजनीतिक संवाद को आगे बढ़ाता है। भारत–आसियान संबंधों में आसियान–भारत शिखर सम्मेलन, पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन, आसियान क्षेत्रीय मंच और एडीएमएम–प्लस जैसे मंच महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन मंचों पर भारत समुद्री सुरक्षा, आतंकवाद–रोधी सहयोग, साइबर सुरक्षा, आपदा प्रबंधन, ऊर्जा सुरक्षा

और हिंद–प्रशांत क्षेत्र में स्थिरता जैसे मुद्दों पर अपनी नीति स्पष्ट करता है। इससे भारत को क्षेत्रीय सुरक्षा व्यवस्था में सक्रिय भागीदारी का अवसर मिलता है। संस्थागत आयाम का एक महत्वपूर्ण पक्ष आसियान केंद्रीयता है। भारत हिंद–प्रशांत क्षेत्र में आसियान की केंद्रीय भूमिका का समर्थन करता है, क्योंकि इससे क्षेत्रीय व्यवस्था किसी एक महाशक्ति के प्रभाव में आने के बजाय संतुलित और समावेशी बनी रहती है। आसियान–नेतृत्व वाले मंच भारत को चीन, जापान, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और अन्य देशों के साथ संवाद का अवसर भी प्रदान करते हैं। हालाँकि इन संस्थागत व्यवस्थाओं की कुछ सीमाएँ भी हैं। आसियान देशों के बीच आंतरिक मतभेद, चीन पर आर्थिक निर्भरता और निर्णय लेने की सर्वसम्मति–आधारित प्रक्रिया कई बार ठोस सुरक्षा निर्णयों को धीमा कर देती है। फिर भी भारत के लिए आसियान के संस्थागत मंच क्षेत्रीय सुरक्षा, विश्वास–निर्माण और रणनीतिक सहयोग के महत्वपूर्ण साधन हैं।

भारत की क्षेत्रीय सुरक्षा नीति में आसियान देशों की अलग–अलग भूमिका:– भारत की क्षेत्रीय सुरक्षा नीति में आसियान देशों की भूमिका समान नहीं है, क्योंकि प्रत्येक देश की भौगोलिक स्थिति, सामरिक क्षमता, आर्थिक हित, चीन के साथ संबंध और भारत के साथ सहयोग का स्वरूप अलग–अलग है। वर्तमान में आसियान में 11 सदस्य देश हैंय तिमोर–लेस्ते 26 अक्टूबर 2025 को 11वाँ सदस्य बना। भारत की 'एक्ट ईस्ट नीति' में आसियान को विशेष प्राथमिकता दी गई है और 2022 में भारत–आसियान संबंधों को व्यापक रणनीतिक साझेदार का दर्जा मिला। इसलिए भारत की क्षेत्रीय सुरक्षा नीति को समझने के लिए आसियान देशों की अलग–अलग भूमिका का विश्लेषण आवश्यक है।

1. इंडोनेशिया की भूमिका:– इंडोनेशिया आसियान का सबसे बड़ा देश है और हिंद–प्रशांत क्षेत्र में उसकी भौगोलिक स्थिति अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह हिंद महासागर और प्रशांत महासागर को जोड़ने वाले समुद्री मार्गों के निकट स्थित है। भारत और इंडोनेशिया दोनों समुद्री सुरक्षा, स्वतंत्र नौवहन और नियम–आधारित व्यवस्था के समर्थक हैं। इंडोनेशिया भारत के लिए इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि वह मलक्का जलडमरूमध्य और अंडमान–निकोबार क्षेत्र के निकट सामरिक संतुलन में भूमिका निभाता है। हिंद–प्रशांत में आसियान केंद्रीयता को मजबूत करने में भी इंडोनेशिया की भूमिका प्रमुख है।

2. सिंगापुर की भूमिका:– सिंगापुर भारत का सबसे विश्वसनीय और सक्रिय आसियान साझेदार माना जाता है। यह छोटा देश होते हुए भी आर्थिक, तकनीकी और रक्षा सहयोग में बहुत महत्वपूर्ण है। भारत–सिंगापुर के बीच रक्षा प्रशिक्षण, नौसैनिक सहयोग, साइबर सुरक्षा और वित्तीय संपर्क मजबूत हैं। सिंगापुर भारत को दक्षिण–पूर्व एशिया में रणनीतिक प्रवेश–द्वार प्रदान करता है। भारत की क्षेत्रीय सुरक्षा नीति में सिंगापुर की भूमिका "सुरक्षा सुविधादाता" की है, क्योंकि वह भारत और आसियान के बीच संवाद, निवेश, रक्षा सहयोग और समुद्री संपर्क को मजबूत करता है।

3. वियतनाम की भूमिका:– वियतनाम भारत की सुरक्षा नीति में अत्यंत महत्वपूर्ण देश है, विशेषकर दक्षिण चीन सागर के संदर्भ में। वियतनाम चीन की समुद्री सक्रियता से सीधे प्रभावित है और भारत के साथ रक्षा तथा ऊर्जा सहयोग बढ़ाना चाहता है। भारत और वियतनाम के बीच नौसैनिक सहयोग, रक्षा प्रशिक्षण और सामरिक संवाद भारत की 'एक्ट ईस्ट नीति' को मजबूत करते हैं। वियतनाम भारत के लिए ऐसा साझेदार है जो हिंद–प्रशांत क्षेत्र में चीन के प्रभाव को संतुलित करने में सहायक हो सकता है।

4. फिलीपींस की भूमिका:– फिलीपींस भी दक्षिण चीन सागर विवाद से प्रभावित आसियान देश है। भारत के लिए फिलीपींस की भूमिका समुद्री सुरक्षा और नियम–आधारित व्यवस्था के समर्थन में महत्वपूर्ण है। हाल के वर्षों में भारत और फिलीपींस के बीच रक्षा सहयोग बढ़ा है।

5. म्यांमार की भूमिका:– म्यांमार भारत की क्षेत्रीय सुरक्षा नीति में सबसे संवेदनशील देश है, क्योंकि यह भारत और दक्षिण–पूर्व एशिया के बीच भूमि–पुल का कार्य करता है। भारत के पूर्वोत्तर राज्यों की सुरक्षा, सीमापार उग्रवाद, अवैध तस्करी, शरणार्थी समस्या और संपर्क परियोजनाएँ म्यांमार से जुड़ी हुई हैं। भारत–म्यांमार–थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग जैसे प्रोजेक्ट भारत की 'एक्ट ईस्ट नीति' के लिए महत्वपूर्ण हैं। हालांकि म्यांमार की राजनीतिक अस्थिरता भारत–आसियान सहयोग के सामने गंभीर चुनौती भी उत्पन्न करती है।

6. थाईलैंड की भूमिका:– थाईलैंड भारत और आसियान के बीच भूमि संपर्क का महत्वपूर्ण केंद्र है। भारत–म्यांमार–थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग भारत को दक्षिण–पूर्व एशिया से जोड़ने वाली प्रमुख परियोजना है। थाईलैंड समुद्री और स्थल दोनों प्रकार की कनेक्टिविटी में भारत का सहयोगी है। इसके अतिरिक्त, बिम्सटेक और आसियान दोनों मंचों में थाईलैंड की उपस्थिति भारत की क्षेत्रीय सुरक्षा नीति को दक्षिण एशिया और दक्षिण–पूर्व एशिया से जोड़ती है।

7. मलेशिया की भूमिका:– मलेशिया भारत के लिए आर्थिक, सामुदायिक और समुद्री दृष्टि से महत्वपूर्ण है। मलक्का जलडमरूमध्य के निकट स्थित होने के कारण मलेशिया समुद्री व्यापार और ऊर्जा सुरक्षा में प्रमुख भूमिका निभाता है।

8. ब्रुनेई की भूमिका:– ब्रुनेई छोटा देश है, लेकिन ऊर्जा सुरक्षा और दक्षिण चीन सागर के संदर्भ में उसका महत्व है। भारत की ऊर्जा आवश्यकताओं और समुद्री हितों की दृष्टि से ब्रुनेई उपयोगी साझेदार हो सकता है। इसकी भूमिका बड़ी सैन्य शक्ति के रूप में नहीं, बल्कि ऊर्जा, समुद्री स्थिरता और आसियान की सहमति–आधारित निर्णय–प्रक्रिया में दिखाई देती है।

9. कंबोडिया और लाओस की भूमिका:– कंबोडिया और लाओस अपेक्षाकृत छोटे और स्थल–आवेष्ठितध्कम समुद्री प्रभाव वाले देश हैं, लेकिन आसियान की सामूहिक निर्णय–प्रक्रिया में इनका महत्व है। इन देशों पर चीन का आर्थिक प्रभाव अधिक माना जाता है, इसलिए कई बार आसियान के भीतर दक्षिण चीन सागर जैसे मुद्दों पर संयुक्त रुख बनाना कठिन हो जाता है। भारत के लिए इन देशों में विकास सहयोग, क्षमता निर्माण, शिक्षा, डिजिटल सहयोग और सांस्कृतिक संपर्क के माध्यम से प्रभाव बढ़ाने की संभावना है।

10. तिमोर–लेस्ते की भूमिका:– तिमोर–लेस्ते नया सदस्य है, इसलिए भारत– आसियान सुरक्षा ढांचे में इसकी भूमिका अभी उभर रही है। इसकी स्थिति हिंद–प्रशांत क्षेत्र में महत्वपूर्ण है और भविष्य में यह समुद्री सहयोग, विकास साझेदारी और क्षेत्रीय स्थिरता में भूमिका निभा सकता है। आसियान में इसके शामिल होने से संगठन का भू–राजनीतिक विस्तार और बढ़ा है।

भारत की क्षेत्रीय सुरक्षा नीति को और प्रभावी बनाने के लिए कुछ महत्वपूर्ण सुझाव:– भारत आसियान देशों के साथ अपने संबंधों को केवल कूटनीतिक स्तर तक सीमित न रखकर व्यावहारिक सुरक्षा सहयोग में भी और मजबूत करे। इसके लिए समुद्री सुरक्षा, रक्षा अभ्यास, आतंकवाद–रोधी सहयोग, साइबर सुरक्षा, सीमा–पार अपराधों की रोकथाम और संपर्क परियोजनाओं पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए, प्रमुख सुझाव निम्नलिखित है–

1. भारत को हिंद–प्रशांत क्षेत्र में आसियान की केंद्रीयता को लगातार समर्थन देना चाहिए। भारत को यह प्रयास करना चाहिए कि आसियान देशों को यह अनुभव हो कि भारत उनके लिए केवल रणनीतिक साझेदार नहीं, बल्कि विश्वसनीय और दीर्घकालिक सहयोगी है।

2. भारत को समुद्री सुरक्षा सहयोग को और मजबूत करना चाहिए। दक्षिण चीन सागर, मलक्का जलडमरूमध्य और हिंद महासागर के समुद्री मार्ग भारत और आसियान दोनों के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। इसलिए संयुक्त नौसैनिक अभ्यास, समुद्री निगरानी, सूचना–साझाकरण और आपदा प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाया जाना चाहिए। इससे समुद्री डकैती, अवैध मछली पकड़ने, तस्करी और अन्य समुद्री खतरों से निपटने में सहायता मिलेगी।

3. भारत को आसियान देशों के साथ रक्षा तकनीक, सैन्य प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण के क्षेत्र में अधिक सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। भारत रक्षा उपकरणों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों और तकनीकी सहयोग के माध्यम से आसियान देशों की सुरक्षा क्षमता को बढ़ाने में योगदान दे सकता है।

4. भारत को अपनी संपर्क परियोजनाओं को समयबद्ध ढंग से पूरा करना चाहिए। इन परियोजनाओं में देरी भारत की क्षेत्रीय नीति की प्रभावशीलता को कम करती है, इसलिए इन्हें प्राथमिकता के आधार पर पूरा किया जाना चाहिए।

5. भारत को पूर्वोत्तर भारत को आसियान नीति का प्रमुख आधार बनाना चाहिए। पूर्वोत्तर क्षेत्र भारत और दक्षिण–पूर्व एशिया के बीच प्राकृतिक सेतु है। यदि इस क्षेत्र में आधारभूत संरचना, व्यापार, शिक्षा, पर्यटन और सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत किया जाए, तो भारत–आसियान संबंधों को नया आयाम मिल सकता है।

6. भारत और आसियान को आतंकवाद, कट्टरपंथ, साइबर अपराध और संगठित अपराधों के विरुद्ध संयुक्त तंत्र विकसित करना चाहिए।

निष्कर्ष:– भारत की क्षेत्रीय सुरक्षा नीति और आसियान देशों की भूमिका का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि वर्तमान वैश्विक और क्षेत्रीय व्यवस्था में दक्षिण–पूर्व एशिया केवल भौगोलिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि सामरिक, आर्थिक और कूटनीतिक दृष्टि से भी भारत के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण क्षेत्र बन चुका है। भारत की सुरक्षा नीति अब केवल अपनी सीमाओं की रक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि समुद्री सुरक्षा, ऊर्जा सुरक्षा, व्यापारिक मार्गों की सुरक्षा, आतंकवाद–रोधी सहयोग, साइबर सुरक्षा, रक्षा साझेदारी और क्षेत्रीय संतुलन जैसे व्यापक आयामों को भी शामिल

करती है। इस संदर्भ में आसियान देश भारत की "एक्ट ईस्ट नीति" के प्रमुख आधार स्तंभ के रूप में सामने आते हैं। भारत और आसियान के संबंधों में समय के साथ गहराई आई है। प्रारंभिक दौर में ये संबंध मुख्यतः आर्थिक और सांस्कृतिक सहयोग तक सीमित थे, लेकिन बदलती क्षेत्रीय परिस्थितियों, विशेषकर हिंद–प्रशांत क्षेत्र में शक्ति–संतुलन की राजनीति, चीन के बढ़ते प्रभाव और समुद्री क्षेत्रों में उभरती चुनौतियों ने भारत–आसियान संबंधों को सुरक्षा दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण बना दिया है। भारत के लिए हिंद महासागर और दक्षिण चीन सागर के समुद्री मार्ग अत्यंत आवश्यक हैं, क्योंकि इन्हीं मार्गों से ऊर्जा आपूर्ति और व्यापार का बड़ा हिस्सा संचालित होता है। ऐसे में आसियान देशों के साथ समुद्री सहयोग भारत की क्षेत्रीय सुरक्षा नीति का अभिन्न भाग बन गया है। आसियान देशों की भूमिका भारत की सुरक्षा नीति में बहुआयामी है। सिंगापुर, वियतनाम, इंडोनेशिया, मलेशिया, थाईलैंड और फिलीपींस जैसे देश भारत के साथ रक्षा अभ्यास, नौसैनिक सहयोग, प्रशिक्षण, क्षमता निर्माण और रणनीतिक संवाद में सक्रिय भूमिका निभाते हैं। विशेष रूप से वियतनाम भारत के लिए एक महत्त्वपूर्ण सामरिक साझेदार के रूप में उभरा है, जबकि इंडोनेशिया और सिंगापुर समुद्री सुरक्षा तथा मलक्का जलडमरूमध्य की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। म्यांमार भारत की पूर्वोत्तर सुरक्षा और संपर्क परियोजनाओं के कारण विशेष महत्त्व रखता है। इस प्रकार प्रत्येक आसियान देश भारत की सुरक्षा नीति में अपनी भौगोलिक स्थिति, राजनीतिक प्राथमिकताओं और सामरिक क्षमता के अनुसार योगदान देता है। भारत की क्षेत्रीय सुरक्षा नीति में आसियान की भूमिका केवल चीन के प्रभाव को संतुलित करने तक सीमित नहीं है। यह सहयोग नियम–आधारित क्षेत्रीय व्यवस्था, स्वतंत्र और खुले हिंद–प्रशांत, समुद्री कानूनों के सम्मान, आतंकवाद के विरुद्ध साझेदारी और क्षेत्रीय स्थिरता को बढ़ावा देने से भी जुड़ा है। भारत आसियान की केंद्रीयता को स्वीकार करता है और क्षेत्रीय मंचों जैसे आसियान क्षेत्रीय मंच, पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन तथा आसियान रक्षा मंत्रियों की बैठक–प्लस के माध्यम से संवाद और सहयोग को आगे बढ़ाता है। इन मंचों के माध्यम से भारत क्षेत्रीय विवादों के शांतिपूर्ण समाधान और सामूहिक सुरक्षा व्यवस्था को प्रोत्साहित करता है। हालाँकि भारत–आसियान सुरक्षा सहयोग के सामने कुछ चुनौतियाँ भी हैं। आसियान देशों के हित हमेशा समान नहीं हैं और चीन के साथ उनके आर्थिक संबंध कई बार उनकी रणनीतिक स्थिति को प्रभावित करते हैं। इसके अतिरिक्त भारत की परियोजनाओं में देरी, संपर्क–सुविधाओं की कमी और सीमित रक्षा–निवेश भी सहयोग की गति को प्रभावित करते हैं। फिर भी भारत और आसियान के बीच विश्वास, ऐतिहासिक संपर्क और साझा सुरक्षा हित इस साझेदारी को दीर्घकालिक आधार प्रदान करते हैं। अंततः कहा जा सकता है कि भारत की क्षेत्रीय सुरक्षा नीति में आसियान देशों की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण और निरंतर बढ़ती हुई है। आसियान भारत के लिए केवल पड़ोसी क्षेत्र नहीं, बल्कि हिंद–प्रशांत व्यवस्था में स्थिरता, संतुलन और सहयोग का प्रमुख माध्यम है। यदि भारत आसियान देशों के साथ रक्षा, समुद्री, आर्थिक और संपर्क–संबंधी सहयोग को और मजबूत करता है, तो वह न केवल अपनी क्षेत्रीय सुरक्षा को सुदृढ़ कर सकेगा, बल्कि एशिया में शांति, स्थिरता और संतुलित शक्ति–व्यवस्था के निर्माण में भी प्रभावी भूमिका निभा सकेगा। इसलिए भारत–आसियान सहयोग आने वाले समय में भारत की विदेश नीति और सुरक्षा नीति, दोनों का केंद्रीय तत्व बना रहेगा

सन्दर्भ सूचीः–

1. जयशंकर, एस. (2020). द इंडिया वेः अनिश्चित विश्व के लिए रणनीतियाँ, हार्पर कॉलिन्स इंडिया प्रकाशन, नई दिल्ली ।

2. सिंह, एस. (2020). लुक ईस्ट से एक्ट ईस्टः मोदी युग में भारत–आसियान संबंधों का रूपांतरण, के. डब्ल्यू. पब्लिशर्स, नई दिल्ली।

3. बरुआह, एस. (2020). राष्ट्र के नाम परः भारत और उसका पूर्वोत्तर, स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस प्रकाशन, अमेरिका।

4. ब्रूस्टर, डी. (2014). भारत का महासागरः क्षेत्रीय नेतृत्व के लिए भारत के प्रयास की कहानी, रूटलेज प्रकाशन, नई दिल्ली।

5. आचार्य, ए. (2012). दक्षिण–पूर्व एशिया का निर्माणः एक क्षेत्र के अंतरराष्ट्रीय संबंध, कॉर्नेल यूनिवर्सिटी प्रेस प्रकाशन, अमेरिका।

6. ब्रूस्टर, डी. (2018). समुद्र में भारत और चीनः हिंद महासागर में नौसैनिक प्रभुत्व की प्रतिस्पर्धा, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस प्रकाशन।

7. कैबलेरो–एंथनी, एम. (2005). दक्षिण–पूर्व एशिया में क्षेत्रीय सुरक्षाः आसियान पद्धति से आगे, इंस्टीट्यूट ऑफ साउथईस्ट एशियन स्टडीज, सिंगापुर।

8. एमर्स, आर. (2003). आसियान और एआरएफ में सहयोगात्मक सुरक्षा और शक्ति–संतुलन, रूटलेज प्रकाशन, नई दिल्ली।

9. हॉल, आई. (2019). मोदी और भारतीय विदेश नीति का पुनर्निर्माण, ब्रिस्टल यूनिवर्सिटी प्रेस।

10. हाओकिप, टी. (2015). भारत की लुक ईस्ट नीति और पूर्वोत्तर, सेज पब्लिकेशंस इंडिया।

11. खिलनानी, एस., कुमार, आर., मेहता, पी. बी., मेनन, पी., निलेकणी, एन., राघवन, एस., सरन, एस., और वरदराजन, एस. (2013). नॉन–अलाइनमेंट 2.0: इक्कीसवीं सदी में भारत की विदेश और सामरिक नीति, पेंगुइन बुक्स इंडिया प्रकाशन, नई दिल्ली।

12. ओग्डेन, सी. (2023). भारतदृआसियान संबंधः मानदंड–आधारित दृष्टिकोण की उपयोगिता और सीमाएँ। इंटरनेशनल स्टडीज, 60(2), 155दृ175. ीजजचेःध्ध्कवप.वतहध्10.1177ध्00208817231162272

13. बरुआ, टी. (2020). उत्तर–पूर्व भारत में लुक ईस्ट नीतिध्एक्ट ईस्ट नीति–प्रेरित विकास मॉडल। जादवपुर जर्नल ऑफ इंटरनेशनल रिलेशंस, 24(1), 101दृ120. ीजजचेःध्ध्कवप.वतहध्10.1177ध्0973598420908844

14. पैन, सी. (2014). 'इंडो–पैसिफिक' और एशियाई क्षेत्रीय व्यवस्था में चीन के उदय को लेकर भू–राजनीतिक चिंताएँ। ऑस्ट्रेलियन जर्नल ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स, 68(4), 453दृ469.

15. मुराविएव, ए. डी., अहलावत, डी., एवं ह्यूजेस, एल. (2022). भारत की सुरक्षा दुविधाः रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखते हुए बड़ी शक्तियों से जुड़ाव। इंटरनेशनल पॉलिटिक्स, 59(6), 1119दृ1138. ीजजचेःध्ध्कवप.वतहध्10. 1057ध्41311–021–00350– .

16. न्गाइबिआकचिंग, एवं पांडे, ए. (2020). भारत की एक्ट ईस्ट नीति और आसियानः इंडो–पैसिफिक में साझेदारी के माध्यम से क्षेत्रीय व्यवस्था का निर्माण, इंटरनेशनल स्टडीज, 57(1), 67दृ78. ीजजचेःध्ध्कवप.वतहध्10. 1177ध्0020881719885526.

17. विदेश मंत्रालय, भारत सरकार .(2025, 15 जुलाई). भारत–आसियान संबंधों पर संक्षिप्त विवरण, विदेश मंत्रालय, भारत सरकार।

18. विदेश मंत्रालय, भारत सरकार .(2024, 10 अक्टूबर). क्षेत्र में शांति, स्थिरता और समृद्धि के संदर्भ में आसियान–भारत व्यापक रणनीतिक साझेदारी को सुदृढ़ करने पर संयुक्त वक्तव्य। विदेश मंत्रालय।

19. आसियान सचिवालय .(2025, अक्टूबर). आसियान–भारत व्यापक रणनीतिक साझेदारी का अवलोकन।

20. प्रेस सूचना ब्यूरो, भारत सरकार .(2025, 26 अक्टूबर). 22वें आसियान–भारत शिखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री की भागीदारी, पीआईबी।

21. प्रेस सूचना ब्यूरो, भारत सरकार .(2022, 22 नवंबर). रक्षा मंत्री और कंबोडिया के रक्षा मंत्री ने सिएम रीप में प्रथम भारत–आसियान रक्षा मंत्रियों की बैठक की सह–अध्यक्षता की, पीआईबी।

Copyright & License:

© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.